iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 **Issue:** V **Month of publication:** May 2025

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2025.70149

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue V May 2025- Available at www.ijraset.com

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सामाजिक विज्ञान विषय के छात्रों पर नई शिक्षा नीति- 2020 के प्रभाव का अध्ययन।

Harish Kumar Singh[1], डॉ. मो. सदरे आलम[2]
[1]शिक्षा शास्त्र विभाग, मगध यूनिवर्सिटी बोधगया (*बिहार*)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया (बिहार)

सार- कृष्ण गोपाल सैयदन (1967) ने कहा है कि मध्य विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के मध्य समन्वय स्थापित करके ही उन्हें उपयोगी ज्ञान एवं अनुभव प्रदान किया जा सकता है। इसके साथ ही विद्यार्थियों में सफल जीवन जीने की क्षमता का विकास किया जा सकता है तथा उनके व्यक्तित्व के सभी आयामों, पहलुओं एवं क्षेत्रों को प्रभावित करने एवं एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्हें एक निश्चित दिशा प्रदान की जा सकती है। इसीलिए आधुनिक युग में विद्यार्थियों में दक्षता एवं कौशल के विकास के साथ-साथ सद्भावना, मिलनसारिता, कार्यकुशलता, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन तथा संस्कृति का संरक्षण आदि को सेकेंडरी शिक्षा के आवश्यक उद्देश्यों में महत्वपूर्ण महत्व दिया जा रहा है। अर्थात् वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करके करके सीखने और सामाजोपयोगी नागरिक बनने पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा। वास्तव में सेकेंडरी शिक्षा के सभी स्तरों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। सेकेंडरी स्तर के विद्यालयों में 14 वर्ष से 18 आयु वर्ष तक के बालक एवं बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने की शिक्षा है जहाँ पर कक्षा 9 व 10 को सेकेंडरी तथा कक्षा 11 व 12 को उच्चतर सेकेंडरी शिक्षा कही जाती है। सेकेंडरी शिक्षा औपचारिक शिक्षा का दूसरा चरण है, प्राथमिक और सेकेंडरी शिक्षा के बीच का अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है, न केवल पाठ्यक्रम में बल्कि संगठन में भी। शिक्षा विचारक कार्टर बी0गुड0 (1959) ने माध्यमिक शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि- सेकेंडरी शिक्षा पठन-पाठन का वह समय है जो सामान्यतः 12 से 17 आयु वर्ग के बालकों और बालिकाओं के लिए होता है। इस अवधि में अध्ययन के मुख्य साधनों और उपकरणों का उपयोग, स्वामित्व, विचार स्वतंत्रता, विभिन्न जानकारी हासिल करने, बौद्धिक दक्षता, रुचि तथा आदतों के विकास पर जोर दिया जाता है। लेकिन भारत के सन्दर्भ में सेकेंडरी शिक्षा का काल 14 से 18 वर्ष तक की आयु का स्वीकार किया जाता है। वर्तमान स्थिति में सेकेंडरी शिक्षा के अत्यंत महत्वपूर्ण होने के मुख्य कारणों में निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया जा सकता है।
मुख्य शब्द- केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड**, नई शिक्षा नीति 2020,** औपचारिक शिक्षा**, सामाजिक विज्ञान शिक्षण, ग्रामीण और शहरी**

I. प्रस्तावना

नई शिक्षा नीति 2020 के ऊपर आज यह बड़ी जिम्मेदारी है कि किस प्रकार शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माण किया जाये। साथ ही साथ उनको इस दायित्व के लिए भी चिन्तन करना है कि बदलती शिक्षा के नवाचारों, नवीन आंदोलनों, संस्था विहीनीकरण, भाषा विहीनीकरण जैसे नये विचारों से उत्पन्न हुए नवीन शैक्षिक आंदोलनों ने खुली शिक्षा , सतत् शिक्षा और आजीवन शिक्षा जैसी अवधारणाओं को विकसित किया जो कि वर्तमान समय की माँग मानी जा सकती है। वास्तव में आज शिक्षा को समाज की बुनियादी जरूरतों में से एक मानी जाती है। इसीलिए सभी लोकतान्त्रिक देशों में व्यक्ति के विकास एवं लोकतंत्र की प्रगति हेतु एक न्यूनतम स्तर की शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया है। सामाजिक अध्ययन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें शिक्षा और जीवन में सफलता के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करता है। यह संदर्भ-आधारित सामग्री प्रदान करके पढ़ने और सीखने में सुधार करता है जो छात्रों की पढ़ने की क्षमता और आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ाता है। यह नागरिक जिम्मेदारियों और मूल्यों को भी सिखाता है, यह सुनिश्चित करता है कि छात्र इतिहास, राजनीति और संस्कृति के बारे में सीखकर एक लोकतांत्रिक समाज में नागरिक के रूप में अपनी भूमिका को समझें। इसके अलावा, सामाजिक अध्ययन सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है, जिससे छात्रों को विविध पृष्ठभूमि की सराहना करने और उनसे जुड़ने में मदद मिलती है, जो एक बहुसांस्कृतिक दुनिया में सार्थक बातचीत के लिए महत्वपूर्ण है। सामाजिक विषय का अध्ययन भविष्य के कैरियर पथों को कैसे प्रभावित कर सकता है? इसका संभावित उत्तर है कि सामाजिक विषय का अध्ययन शिक्षा, सार्वजनिक नीति, कानून, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सामाजिक कार्य और पत्रकारिता जैसे विभिन्न कैरियर पथों के द्वार खोल सकता है। सामाजिक अध्ययन से प्राप्त कौशल और ज्ञान, जिसमें आलोचनात्मक सोच, शोध और संचार शामिल हैं, कई व्यवसायों में अत्यधिक

©IJRASET: All Rights are Reserved

मूल्यवान हैं। वस्तुतः किसी भी देश अथवा राष्ट्र को प्रगति के पथ पर निरन्तरता के साथ आगे बढ़ाने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती है। जबकि सेकेंडरी शिक्षा वह साधन है जिससे किसी भी व्यक्ति के अन्तर्निहित गुणों और विशेषताओं का विकास करके उसके व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाने का कार्य करती है। सेकेंडरी शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थी अपने आन्तरिक और बाहरी वातावरण के साथ समायोजन होने की कला को सीखता है क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति को मनुष्य बनाने का कार्य करती है। अर्थात् मनुष्य में मनुष्यता पैदा करने का कार्य शिक्षा की करती है। साथ ही साथ मनुष्य को सही और गलत की पहचान करने में भी मदद करती है। समाज एवं राष्ट्र को प्रगतिशील बनाने का कार्य भी शिक्षा व्यक्ति में निहित गुणों के आधार किया जाता है। दूसरे शब्दों में स्पष्ट किया जाये तो शिक्षा को ग्रहण कर मनुष्य स्वयं का, समाज का तथा राष्ट्र का उत्थान सम्भव किया जा सकता है।इसी कारण प्रत्येक देश के लिए शिक्षा उसकी प्रथम वरीयता का वस्तु मानी जाती है। शिक्षा को व्यक्ति के सफलता की प्रथम सीढ़ी स्वीकार किया जाता है जिसे पार करके ही कोई देश अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इतना ही नहीं शिक्षा के सभी स्तरों में सेकेंडरी शिक्षा को किसी भी देश के आर्थिक विकास, चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रीय विचारधारा के विकास महत्वपूर्ण योगदान करने वाली कड़ी माना जाता है। देश में कार्यशील जनापूर्ति में जितना योगदान सेकेंडरी शिक्षा का है उतना शिक्षा के अन्य स्तरों का नहीं है। साथ ही साथ नैतिक गतिविधियों, सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक कार्यों के उत्थान की गति भी सेकेंडरी शिक्षा के स्तर और गति पर निर्भर करता है। इसीलिए नवीन शिक्षा नीति 2020 ने सेकेंडरी शिक्षा को किसी व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष से सम्बन्धित न होकर देश की सम्पूर्ण जनसंख्या से सम्बन्धित करने पर बल देने के साथ ही सेकेंडरी शिक्षा को देश की शिक्षा की मजबूत कड़ी बनाकर इसको हर कदम पर हर व्यक्ति के जीवन से सम्पर्क स्थापित करना स्वीकार किया है। जिसका तात्पर्य यह है कि नवीन शिक्षा नीति 2020 ने सेकेंडरी शिक्षा को राष्ट्र के सभी व्यक्तियों की शिक्षा अथवा जनसाधारण की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार माना है। साथ ही यह भी कहा है कि सेकेंडरी शिक्षा की अवहेलना करने से प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति में नित्यप्रति अनेक बाधायें उत्पन्न होने लगेगी और विकास की प्रगतिधारा में पिछड़ जायेगा।

II. शोध समस्या

अनुसन्धान कर्ता द्वारा वर्तमान अध्ययन के लिए चुनी गई अनुसन्धान समस्या की पहचान निम्न रूप में की गई है- ''उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा में सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर नवीन शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव का अध्ययन''।

अनुसन्धान चरों की परिभाषा- वर्तमान अनुसन्धान समस्या में प्रयुक्त शब्दावलियों को निम्न रूपों में परिभाषित किया गया है-

औपचारिक शिक्षा- देश के शैक्षिक ढांचे में माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक और उच्च शिक्षा को जोड़ने वाली एक मध्यवर्ती कड़ी के रूप में मान्यता प्राप्त है। माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में मुख्य रूप से 14 से 18 वर्ष की आयु के छात्र शामिल हैं, जिसमें कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा शामिल है। उत्तर प्रदेश में सेकेंडरी शिक्षा का संचालन प्रयागराज (इलाहाबाद) की सेकेंडरी शिक्षा परिषद द्वारा प्रबंधित किया जाता है। प्रस्तुत अनुसन्धान अध्ययन में सेकेंडरी शिक्षा से तात्पर्य सेकेंडरी विद्यालयों के कक्षा 9 और 10 में नामांकित छात्रों की शिक्षा से है।

सामाजिक विज्ञान का शिक्षण- सामाजिक विज्ञान का शिक्षण सेकेंडरी शिक्षा के जूनियर सेकेंडरी स्तर पर पढ़ाए जाने वाले अनिवार्य विषय को संदर्भित करता है। यह छात्रों को समाज के मूलभूत विषयों की विस्तृत समझ प्रदान करता है, जिससे वे समाज और राष्ट्र के हितों को पूरा करने में सक्षम होते हैं वर्तमान अनुसन्धान अध्ययन में, सामाजिक विज्ञान का शिक्षण सेकेंडरी स्तर पर अनिवार्य शिक्षण विषय को संदर्भित करता है जो कक्षा 9 और 10 में छात्रों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों, सामाजिक चरित्र के विकास और सहयोग, प्रेम और एकजुटता को बढ़ावा देने के बारे में ज्ञान में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, यह एक स्वास्थ्य शैक्षिक परिप्रेक्ष्य के विकास में सहायता करता है, देश की विरासत और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रेम और श्रद्धा को बढ़ावा देता है, सामाजिक प्रगति में सहयोग की सुविधा देता है, सामाजिक सामंजस्य में योगदान देता है, और सामाजिक जीवन को उन्नत, उचित और समृद्ध बनाने के लिए बढ़ाता है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में बदलने के लिए भारत सरकार ने 1986 की शिक्षा नीति के 34 साल बाद अंतरिक्ष वैज्ञानिक कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 29 जुलाई, 2020 को शिक्षा नीति की घोषणा की। दूसरे शब्दों में, इस अनुसन्धान अध्ययन में, नवीन शिक्षा नीति 2020 से तात्पर्य भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई, 2020 को घोषित शिक्षा नीति से है, जिसमें कक्षा 9 और 10 के पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान शिक्षण के मूल विषय से संबंधित प्रावधान शामिल हैं।

अनुसन्धान अध्ययन की उपकल्पनाएं- वर्तमान अनुसन्धान कार्य ने निम्नलिखित अनुसन्धान उपकल्पना की वैधता की पुष्टि की है-

उत्तर प्रदेश की सेकेंडरी शिक्षा में नवीन शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव में यूपी बोर्ड और सीबीएसई बोर्ड के छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अनुसन्धान अध्ययन का दायरा- यह अनुसन्धान अध्ययन नवीन शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव की जांच तक सीमित रखा गया है यह उत्तर प्रदेश राज्य में सेकेंडरी स्तर पर सेकेंडरी शिक्षा की संरचना के भीतर यूपी बोर्ड और सीबीएसई बोर्ड के सरकारी सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त दोनों स्कूलों में कक्षा 9 और 10 के छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर तक सीमित रखा गया है ।

III. संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

किसी साहित्य समीक्षा के अंतर्गत शोध ग्रन्थ को प्राथमिक या द्वितीयक प्रकृति के रूप में विभाजित किया जा सकता है। प्राथमिक स्रोतों की सबसे सरल परिभाषा या तो मूल जानकारी (जैसे सर्वे डेटा) या किसी घटना का प्रथम-व्यक्ति विवरण (जैसे साक्षात्कार लेख) है। जबकि द्वितीयक स्रोत कोई भी प्रकाशित या अप्रकाशित रचना है जो प्राथमिक स्रोत सामग्री का वर्णन, सारांश, विश्लेषण, मूल्यांकन, व्याख्या या समीक्षा करता है। द्वितीयक स्रोतों में उनके तर्कों का समर्थन करने के लिए प्राथमिक स्रोत शामिल हो सकते हैं। आदर्श रूप से, अच्छे शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों को सम्मलित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई शोधकर्ता किसी कानून के कार्यान्वयन और समुदाय पर उसके प्रभावों की जांच करना चाहता है, तो वे संसदीय बहसों के प्रतिलेखों के साथ-साथ संसदीय टिप्पणियों और उस समय के कानूनों के बारे में समाचार रिपोर्टिंग को देख सकते हैं।

साहित्य स्रोत की खोज करना – साहित्य को प्रभावी ढंग से खोजने के लिए, अपने शब्दों को परिभाषित करना चाहिए। अपने विषय क्षेत्र का अन्वेषण करने और अपने शोध के लिए समानार्थी और वैकल्पिक वर्तनी सहित शब्दावलियों का चयन करना चाहिए। अपने खोज शब्दों को विभिन्न उपकरणों में सुसंगत रखें, क्योंकि डेटाबेस एक ही अवधारणा के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग कर सकते हैं। साहित्य स्रोत की खोज के लिए, सबसे पहले जानकारी को संकलित करनी होगी। अपने विषय या शोध प्रश्न को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना चाहिए। मुख्य अवधारणाओं की पहचान कर अपनी शोध रणनीति में मदद करने के लिए प्रासंगिक और विषयगत विभिन्न स्रोतों जैसे कि पुस्तकालय, अनुक्रमणिका, इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस और इंटरनेट का पता लगाएँ। एक विशाल और प्रतिष्ठित संस्थान का पुस्तकालय एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु है, क्योंकि इसमें आपके विषय पर प्रासंगिक सामग्री उपलब्ध हो सकती है। पत्र -पत्रिकाएँ नवीनतम शोध प्रदान करती हैं, इसलिए उन पर ध्यान केंद्रित करें। समाचार पत्र और पत्रिकाएँ वर्तमान मुद्दे प्रदान कर सकती हैं लेकिन गहन विश्लेषण के लिए कम उपयोगी हैं। अप्रकाशित शोध, सम्मेलन पत्र और सरकारी प्रकाशन जैसे कम स्पष्ट स्रोतों पर विचार करें, जिनमें मूल्यवान शोध और डेटा हो सकता है। तत्पश्चात आज के समय की सबसे रोचक खोज आधार- वेबसाइट सर्च, यह देखने के लिए एक बुनियादी वेब साइट की खोज करना चाहिए कि ऑनलाइन क्या जानकारी उपलब्ध है, जो आपके मुख्य शब्दों और विषय विचारों को परिष्कृत कर सकती है। उसके बाद, यह देखने के लिए लाइब्रेरी खोजों की जाँच करें कि पुस्तकालयों में कौन सी पुस्तकें या अध्याय उपलब्ध हैं ताकि आप जो खोज रहे हैं उसे स्पष्ट कर सकें। अंत में, अपनी पिछली खोजों से मुख्य शब्दों का उपयोग करके डेटाबेस खोज करें और अपने विषय क्षेत्र या अनुशासन के लिए सबसे उपयुक्त खोजने के लिए लाइब्रेरी की सूची से विभिन्न स्रोतों उपयोग में लाया जा सकता है। प्रस्तुत अनुसन्धान अध्ययन में सम्बन्धित अनुसन्धान साहित्य के स्रोत के रूप में पुस्तकों और पाठ्य पुस्तकों की सामग्री, सामान्य संदर्भ, सामयिक प्रकाशन, वार्षिक पुस्तिका, अभिलेख, एकत्रित पुस्तकों की सूची, अंतर्राष्ट्रीय अनुसन्धान सारांश, मासिक पत्र, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ समय पर प्रकाशित होने वाली अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं की सूचकांक निर्देशिकाएँ, लघु पुस्तकें, राजकीय अभिलेख, समितियों और संघों के प्रकाशन, विश्वकोश, पत्रावली, पुस्तकें, वार्षिक पुस्तकें और सहायक पुस्तकें तथा निर्देशिका, शैक्षिक अनुसन्धान सारांश, अंतर्राष्ट्रीय अनुसन्धान सारांश, शैक्षणिक अभिलेखीय सारांश नामक वार्षिक प्रकाशन और अनुसन्धान ग्रंथ तथा लघु अनुसन्धान ग्रंथ साहित्य के पुनर्निरीक्षण इत्यादि।

IV. अनुसन्धान पद्धति

उत्तर प्रदेश में सेकेंडरी शिक्षा में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव पर एक अध्ययन विषय से प्रस्तावित अनुसन्धान अध्ययन के लिए अनुसन्धान कर्ता ने विषय की प्रकृति के आधार पर आंकड़ों के संकलन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का चयन किया है। इस प्रकार अनुसन्धान कर्ता ने उत्तर प्रदेश राज्य में सेकेंडरी स्तर पर पठन पाठन में संलग्न युवा विद्यार्थियों के विभिन्न पहलुओं पर आधारित आंकड़े प्रस्तुत करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

प्रतिदर्श- यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक- वर्तमान अनुसन्धान के लिए चयनित प्रतिदर्श

राज्य - सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश

जिला - गाजियाबाद, सहारनपुर, लखीमपुर, सोनभद्र और लखनऊ

क्षेत्र - ग्रामीण और शहरी

विद्यालय - उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा परिषद और केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड

लिंग - लड़के और लड़कियां

शोध परिणाम- प्रस्तुत किये गए अनुसन्धान अध्ययन में उत्तर प्रदेश में सेकेंडरी शिक्षा में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के संबंध में उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा परिषद एवं केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों से एकत्रित आंकड़ों को सारणीबद्ध कर सांख्यिकीय रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिसे निम्न तालिका में दर्शाया जा सकता है-

तालिका संख्या: उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा परिषद एवं केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का अध्ययन

©IJRASET: All Rights are Reserved

क्र0सं0	अनुसन्धान चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
1	उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के छात्र	250	78.20	9.77	0.773	4.6	5.950
2	केन्द्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के छात्र	250	82.80	7.35			

स्वतंत्रता की डिग्री = 498 (0.01 और 0.05 पर महत्व स्तर क्रमशः 2.58 और 1.96 है। और सार्थक अंतर है)

V. अनुसन्धान निष्कर्ष

इस संबंध में प्राप्त परिणामों में उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों तथा केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया गया, अर्थात केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की स्थिति उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ पाई गई। इसका एक संभावित कारण यह हो सकता है कि पारिवारिक एवं आर्थिक परिवेश, सामाजिक स्थिति, राजनीतिक स्तर, विद्यार्थियों के लिए पारिवारिक सहयोग तथा विकास के अवसरों की उपलब्धता जैसे कारक केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर पर हैं।

VI. भावी अनुसन्धान हेतु सुझाव

अनुसन्धान कर्ता ने भावी अनुसन्धान कार्य तथा आगामी अनुसन्धान कर्ताओं के लिए इस विषय से संबंधित अन्य अछूते अनुसन्धान विषयों के संबंध में सुझाव प्रस्तुत किए हैं –

1) यह अनुसन्धान सोनभद्र, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, सहारनपुर एवं गाजियाबाद के अतिरिक्त अन्य जिलों में भी किया जा सकता है।
2) यह शोध उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा के अतिरिक्त अन्य तकनीकी पाठ्यक्रम जैसे आई.टी.आई और प्राविधिक शिक्षा पर भी किया जा सकता है।
3) यह अनुसन्धान भारत वर्ष के अन्य राज्यों में भी किया जा सकता है। यह शोध सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अतिरिक्त अन्य विषयों पर किया जा सकता है।
4) यह शोध सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अतिरिक्त अन्य विषयों पर किया जा सकता है।
5) सभी शैक्षिक स्तरों पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षण रुचि, आदतें, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, अनुकूलन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव पर अध्ययन किया जा सकता है।
6) विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, आकांक्षा स्तरों, सामाजिक विज्ञान शिक्षा तथा सीखने के व्यवहार का सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
7) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में किशोर विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों, वांछित व्यवसायों तथा सामाजिक विज्ञान शिक्षा पर पर्यावरण जागरूकता तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सकता है।
8) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञान और कला के छात्रों के शैक्षणिक अनुकूलन, उपलब्धि स्तर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा और सीखने के व्यवहार पर अध्ययन की आदतों के प्रभाव की जाँच की जा सकती है।
9) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पुरुष और महिला छात्रों के व्यक्तित्व, आकांक्षा स्तर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, अनुकूलन और अध्ययन की आदतों के बीच संबंध की जाँच की जा सकती है।
10) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सामान्य और दिव्यांग छात्रों की सामाजिक विज्ञान शिक्षा, जीवन की गुणवत्ता और व्यावसायिक आकांक्षाओं पर पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
11) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की अन्य विषयों को पढ़ने की आदतों, सीखने के व्यवहार और शैक्षणिक परिणामों के बीच संबंध का विश्लेषण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] आर. एस. वर्मा (2022): पीएचडी डिग्री (शिक्षा) अध्ययन, पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
[2] ए. एम. पटेल (2022): पीएचडी डिग्री शिक्षा उन्नत विश्वविद्यालय आंध्र प्रदेश
[3] डी. जे. ओझा (2021): पीएचडी डिग्री शिक्षा विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
[4] सिन्हा एन. (2020): शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ में पीएच.डी. डिग्री
[5] विजय प्रताप वर्मा (2020): एम.एड. डिग्री के लिए लघु शोध पत्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।
[6] कुमार हकीम (2021): एम.एड. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
[7] पहाड़िया एल. के. (2021): लघु अनुसन्धान पत्र, शिक्षा संकाय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी।
[8] एन. सी. ई. आर. टी. (2020): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रगति रिपोर्ट, प्रकाशन एन. सी. ई. आर. टी., पृ. 1-118
[9] मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2014): राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए), राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, नई दिल्ली, भारत सरकार, पृ. 21-39
[10] शर्मा, आर. एस. (2018): माध्यमिक शिक्षा के मुद्दे और चिंताएँ, माध्यमिक शिक्षा विभाग, एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।
[11] जैदी, एस.एम.आई.ए. (2020): माध्यमिक शिक्षा योजना एवं मूल्यांकन मैनुअल, प्रकाशन राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय नई दिल्ली, पृ. 130-138
[12] विश्व बैंक (2016): भारत में माध्यमिक शिक्षा, भविष्य में निवेश, मानव विकास इकाई एशियाई क्षेत्र विश्व बैंक, प्रारूप अप्रैल 2016
[13] राय, पारसनाथ (2002): शोध का परिचय, प्रकाशन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पृ.16
[14] त्रिपाठी, रमाशंकर (2008): सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी तर्क, प्रकाशन विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, पृ. 15-16.
[15] शरीन एवं शरीन (2003): शैक्षिक शोध की पद्धतियां, प्रकाशन श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ.5-6.
[16] कुमार अशोक (2010): शैक्षिक अनुसंधान की पद्धतियां, प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन, जयपुर, पृ. 34
[17] अंशु और श्रीकृष्ण (2018): शैक्षिक अनुसंधान की पद्धतियां, प्रकाशन वसुंधरा ऑफसेट एनालिटिकल और शैक्षिक सांख्यिकी, गोरखपुर, पृ. 119-121

©IJRASET: All Rights are Reserved | SJ Impact Factor 7.538 | ISRA Journal Impact Factor 7.894 |

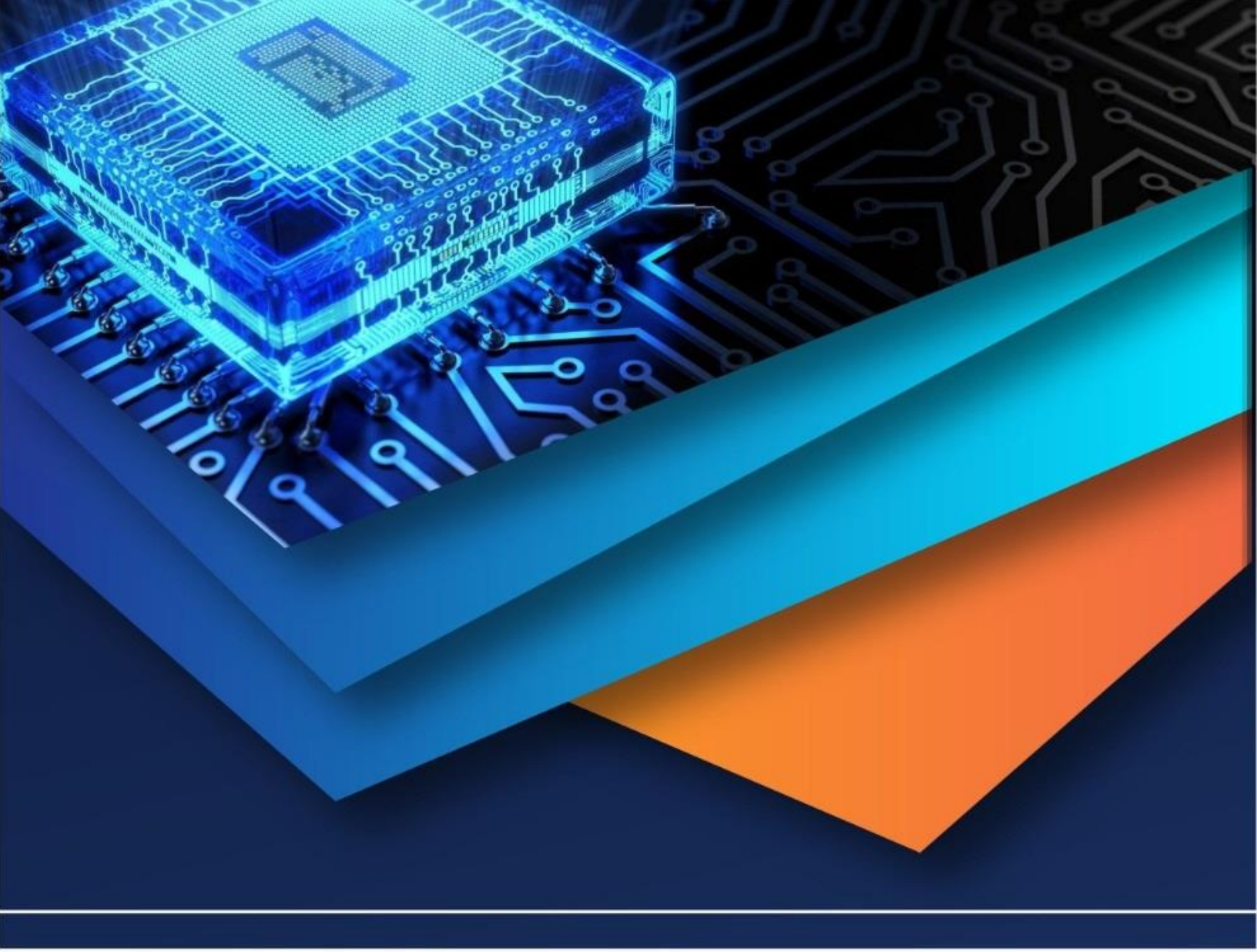

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)